B-2

L-13

MIH

दिनांक

09-11-23

1857 के महाविद्रोह का स्वरूप

– 1857 का महाविद्रोह भारतीय इतिहास का गौरवमई पड़ाव माना जाता है जिसके कारण व प्रभाव जितने अधिक स्पष्ट हैं इसका स्वरूप निर्धारण उतना ही जटिल / पहेली बना दिया गया है क्योंकि विभिन्न विद्वानों ने इसका निर्धारण अपनी पूर्व-मान्यताओं व प्रतिबद्धताओं के आधार पर किया है।

वस्तुतः इस महाविद्रोह के स्वरूप का विश्लेषण करने के लिए हम विभिन्न विद्वानों के मतों को तार्किक रूप से दो भागों में बांट सकते हैं।–

– **प्रथम मत** उन विद्वानों का है जो इसे सीमित व एक वर्गीय विद्रोह मानते हैं तथा इनका सबसे मजबूत तर्क इसे निम्न-लिखित आधारों पर सैनिक विद्रोह मानता है।

- इस विद्रोह का आरम्भ व अन्त दोनों ही सैनिकों की भूमिका से हुआ।
- विद्रोह के आरम्भ का मुख्य कारण चर्बी वाला कारतूस था।
- भारतीय सैनिक रूढ़िवादी थे जो ब्रिटिश सरकार की प्रगतिशील नीतियों से असन्तुष्ट थे। अतः इन्होंने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म को आधार बनाकर तथा उन शासकों की मदद से जिनकी रियासतें हीन ली गयी थीं अथवा उनके सम्मान में कमी की गयी थी,

को लेकर विद्रोह कर दिया।

विद्वानों के इस समूह के तर्कों को महाविद्रोह में व्याप्त गतिविधियों उपलब्ध साक्ष्यों और ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर स्वीकारा नहीं जा सकता क्योंकि इस विद्रोह की शुरुआत व मंत सैन्य भागीदारी से हुआ इस बात से तो इन्कार नहीं किया जा सकता किन्तु यह भी सत्य है कि विद्रोह आरम्भ होते ही विस्तृत क्षेत्र में प्रसारित हुआ और विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न वर्गों ने इसमें हिस्सा लिया और अवध में तो यह जन-सामान्य का विद्रोह बन गया।

- साम्राज्यवादी इतिहासकारों का "कारतूस सिद्धान्त" ही गलत है क्योंकि चर्बी वाला कारतूस विद्रोह का मुख्य कारण न होकर तात्कालिक कारण मात्र था।
- इस विद्रोह में सभी भारतीय सैनिक भाग नहीं ले रहे थे और यदि बंगाल के सैनिक विद्रोही थे तो मद्रास व पंजाब के सैनिक विद्रोह का दमन कर रहे थे।

वस्तुतः मुख्यतः साम्राज्यवादी इतिहासकारों ने इसे स्वार्थी सैनिकों का विद्रोह घोषित कर इसके महत्व को अलंकित करना चाहा जिससे कि वे अपने शासन के औचित्य को सिद्ध कर सकें तथा भारतीयों को इस गौरवमई अध्याय से वंचित किया जा सके ताकि भविष्य में भारतीयों में देशभक्ति की भावना ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध प्रबल न हो सके।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

दूसरा मत उन विद्वानों का है जो इसे व्यापक व बहुवर्गीय तो मानते हैं किन्तु इसे प्रथम, राष्ट्रीय व स्वतंत्रता संग्राम मानने को लेकर इनमें मतभेद बने हुये हैं-

1857 के महाविद्रोह को कुछ विद्वानों ने इस अर्थ में प्रथम विद्रोह नहीं माना क्योंकि इससे पहले भी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध उग्र व प्रभावी विद्रोह होते रहे हैं अतः इसे प्रथम कहने से उन विद्रोहों की महत्ता सीमित हो जायेगी।

किन्तु 1857 के महाविद्रोह ने जिस तरह विशेषतः उत्तर भारत के विस्तृत क्षेत्र को अपने प्रभाव में लिया और इतना प्रभावी साबित हुआ कि तत्कालीन गवर्नर जनरल कैनिंग को यह कहना पड़ा कि हमारा बोरिया-बिस्तर लगभग बंध गया था, इसके साथ ही महाविद्रोह के बाद जिस तरह व्यापक राजनैतिक व प्रशासनिक परिवर्तन करने पड़े, वह साबित कर देता है कि यह ऐसा प्रथम प्रभावी महाविद्रोह था जिसने ब्रिटिश सत्ता को बेचैन कर दिया। और इसी सन्दर्भ में कुछ विद्वान इसे 1857 की क्रांति कहते हैं।

- स्वतंत्रता संग्राम था या नहीं ?
- विद्वानों का वर्ग जो इसे स्वतंत्रता संग्राम नहीं मानता उनका तर्क है कि—
- स्वतंत्रता संग्राम का लक्ष्य व्यापक होना चाहिए जबकि विद्रोही स्वार्थी हितों की सहभागिता के आधार पर एकजुट

थे और ये सभी की स्वतंत्रता की बात नहीं कर रहे थे तथा इस विद्रोह में भारत के बहुत से क्षेत्र और वर्ग शामिल नहीं थे।

• विद्रोही घड़ी की सुइयों को विपरीत दिशा में घुमाने का प्रयास कर रहे थे अर्थात विद्रोही पुनः मुगलिया दरबारी व सामन्ती व्यवस्था को स्थापित करना चाहते थे और जो आधुनिक व प्रगतिशील संरचनायें अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गयी थी उसे विद्रोही मिटा देना चाहते थे। अतः विद्रोह का लक्ष्य पश्चगामी था जबकि स्वतंत्रता संग्राम का लक्ष्य प्रगतिशील होना चाहिए।

स्वतंत्रता संग्राम चलाने के तर्कों को अंशतः स्वीकारा जा सकता है किन्तु सम्पूर्णता में नहीं क्योंकि –

• स्वतंत्रता संग्राम का सबसे अनिवार्य तत्व होता है शोषणकारी विदेशी सत्ता का उन्मूलन, जो इस विद्रोह का भी प्रधान लक्ष्य था। क्योंकि इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि विद्रोही किसी भी तरह अपने क्षेत्र से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहते थे।

एक उल्लेखनीय पक्ष यह भी है कि दुनियां की महान क्रान्तियों या विद्रोहों में सभी वर्ग व क्षेत्र समान रूप से भाग नहीं लेते चाहे वह अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम रहा हो या महान फ्रांसीसी क्रांति ही क्यों ना रही हो।

• औपनिवेशिक शासन ने पिछले 100 वर्षों में जिस तरह भारतीयों के सभी पक्षों का शोषण किया उससे धर्म, मान, जीवन व सम्पत्ति सभी खतरे में पड़ गई और

लोगों में विद्रोह की भावना व्यापक रूप से उपस्थित हो चुकी थी इसीलिए जैसे ही सैनिकों द्वारा विद्रोह का आरम्भ हुआ, विभिन्न क्षेत्र व विभिन्न वर्ग इसमें शामिल होते गये और शीघ्र ही यह महाविद्रोह स्वतंत्रता संग्राम में रूपांतरित होने लगा।

एक-दूसरे को न जानते हुए भी जिस तरह से विद्रोहियों ने ब्रिटिश प्रतीकों पर प्रहार किया वह स्पष्ट कर देता है कि वे किसी भी स्थिति में ब्रिटिश सत्ता को बर्दास्त करने के लिए तैयार नहीं थे और कुछ ऐसी ही परिस्थितियां 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय देखी गयीं।

अतः समय व परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ब्रिटिश सत्ता के प्रति आक्रोश तथा विस्तृत क्षेत्र में प्रसारित होना इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानने का पर्याप्त आधार उपलब्ध कराती है। और समकालीन भारतीय इतिहासकार इस विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानने हेतु सहमत दिख रहे हैं।

⇒ राष्ट्रीय था या नहीं ?

- यदि आधुनिक पूरी केन्द्रित परिभाषा को आधार बनाकर देखा जाये तो 1857 का विद्रोह राष्ट्रीय संघर्ष साबित नहीं होता क्योंकि उस समय लोगों में धर्म, जाति, क्षेत्र जैसी भावना तो उपस्थित थी किन्तु राष्ट्रीय भावना प्रायः अनुपस्थित थी और इस महाविद्रोह के बाद ही भारतीय राष्ट्रवाद क्रमशः

व्यवस्थित रूप लेने लगता है।

- विद्वानों का यह भी मानना है कि राष्ट्रीय संघर्ष के लिए संगठन, विचारधारा व नेतृत्व की सुनिश्चितता होनी चाहिए और लक्ष्य भी प्रगतिशील होने चाहिए किन्तु ये तत्व इस विद्रोह में स्थापित नहीं दिखते अतः इसे राष्ट्रीय संघर्ष नहीं माना जा सकता।

दूसरी तरफ इस महाविद्रोह को राष्ट्रीय संघर्ष न मानते हुये भी इसमें इसे कई तत्व दिखाई देते हैं जो इसे आद्य राष्ट्रवाद की श्रेणी में ला खड़ा करते हैं जैसे कि-

↳ तत्कालीन भारत में जागरूकता की कमी।
↳ संचार व यातायात साधनों की सीमितता के बावजूद जिस तरह यह विद्रोह भारत के विस्तृत क्षेत्र में फैला और विद्रोहियों ने ब्रिटिश प्रतीकों पर प्रहार किया तथा साथ ही हिन्दू मुस्लिम एकता विद्रोह के स्वरूप को धर्म-निरपेक्ष बनाकर, इसे विशिष्ट बना देती है।

- आधुनिक शोधों के मुताबिक विद्रोहियों ने रोटी व कमल के प्रतीक का विद्रोह के लिये प्रयोग किया जो स्पष्ट करता है कि एक व्यवस्थित योजना तो बनाई गई किन्तु इसे अन्जाम तक नहीं पहुंचाया जा सका (स्मरणीय है कि आयरलैंड के स्वतंत्रता संग्राम में रोटी को प्रतीक चिन्ह माना गया था)

इसके साथ ही लाल किले में प्रवेश के बाद प्रशासनिक संचालन के लिए 10 लोगों की एक समिति बनाई गयी

(6 सैनिक + 4 आम जन), जो संकेत करता है कि विद्रोही सफलता के बाद एक प्रगतिशील प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति सचेत थे।

निष्कर्ष :-

1857 के विद्रोह के स्वरूप के बारे में कहे गये सभी कथन आंशिक सत्य तो हो सकते हैं किन्तु उन्हें सम्पूर्णता में स्वीकारा नहीं जा सकता अतः सभी कथनों के समुच्चय को आधार बनाकर विश्लेषण करना होगा तभी भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माने जाने वाले इस महान विद्रोह के विषय के साथ न्याय हो सकेगा, और यह तो स्वीकारना ही होगा कि आधुनिक भारत के इतिहास का यह ऐसा प्रभावी अध्याय है जिसने भविष्य के आन्दोलनों व संघर्षों के लिए एक प्रेरणादायी नींव तैयार कर दी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रश्न- 1857 का विद्रोह, सैन्य विद्रोह से कहीं अधिक और राष्ट्रीय विद्रोह से कम था।

प्रश्न- इस विद्रोह की शुरुआत धार्मिक मुद्दे से हुई किन्तु शीघ्र ही प्रसारित होकर इसने स्वतंत्रता संग्राम का रूप धारण कर लिया क्योंकि इसमें कोई शक नहीं था कि विद्रोही ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहते थे।

- बहादुरशाह जफर का विद्रोह के नेता के रूप में चयन का औचित्य

→ मेरठ के सैनिकों ने विद्रोह कर दिल्ली की ओर कूच किया तथा मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित कर दिया। 82 वर्षीय जफर नेतृत्व स्वीकारने और विद्रोह की सफलता को लेकर दुविधा में थे और साथ ही उनके पास प्रशासन व सेना-पतित्व का पर्याप्त अनुभव भी नहीं था। अतः विद्वानों के एक समूह का मानना है कि विद्रोह के नेता के रूप में जफर का चयन एक भूल थी और यही विद्रोह की असफलता का मुख्य कारण बनी।

किन्तु हमें यह स्वीकारना होगा कि मुगल शासक के रूप में जफर किसी एक वर्ग या क्षेत्र के नेतृत्व कर्ता नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के शासक के रूप में मान्य थे अतः जैसे ही उन्हें विद्रोह का नेता घोषित किया गया वैसे ही यह विद्रोह क्षेत्र, वर्ग या सैन्य विद्रोह की सीमाओं का अतिक्रमण कर हिन्दुस्तान की अस्मिता से जुड़ गया।

अतः जफर का नेतृत्व कर्ता के रूप में चयन का प्रतीकात्मक महत्व विशिष्ट था जिसने विद्रोहियों को नई ऊर्जा दी और विद्रोह के स्वरूप को स्वतंत्रता संग्राम के आयाम से जोड़ दिया वस्तुतः विद्रोह की असफलता के कई अन्य कारक थे अतः जफर के नेतृत्व को विद्रोह की असफलता का मुख्य कारक होना नहीं स्वीकारा जा सकता।